गोतमो राहूगणः। उषाः, १६-१८ अश्विनौ। १-४ जगती, ५-१२ त्रिष्टुप्, १३-१८ उष्णिक्

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते। निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः॥ १.०९२.०१

त्या एताः- ता एताः। उषसः- ज्ञानोदयदेवताः। केतुम्- प्रज्ञाम्। अक्रत- कृतवत्यः। रजसः- आकाशस्येत्याधिभौतिके। चित्ताकाशस्येत्याध्यात्मिके। पूर्वे अर्धे- प्राचीदिग्भाग इत्याधिभौतिके। चित्तस्य प्रज्ञाभाग इत्याध्यात्मिके। भानुम्- चित्किरणम्। अञ्जते- व्यक्तीकुर्वन्ति। धृष्णवः- शत्रुधर्षकाः। आयुधानि- प्रहरणानि। इव। निष्कृण्वानाः- भावनानि संस्कुर्वन्ति। मातरः- जगन्मातरः। अरुषीः- रोचमानाः। गावः- चित्किरणान्। प्रति यन्ति- प्रतिगच्छन्ति॥१॥

उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत।

अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः॥ १.०९२.०२

अरुणाः- द्योतमानाः। भानवः- चित्किरणाः। वृथा- अनायासेन। उतप्तन्- उदगमन्। अरुषीः- रोचमानान्। स्वायुजः- सुखेन आयोक्तुं शक्यान्। गाः- धेनूपलक्षितचिद्रश्मीन्। अयुक्षत- अयोजयन्। उषासः- ज्ञानोदयदेवताः। पूर्वथा- पूर्ववत्। वयुनानि- ज्ञानानि। अक्रन्- चक्रुः। अरुषीः- दीप्तिमत्यः। रुशन्तम्- दीप्तिमन्तम्। भानुम्- आत्मसूर्यम्। अशिश्रयुः- असेवन्त॥२॥

अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः।

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते॥ १.०९२.०३

Dr. Rangani

WEBOLIM

नारीः- नेत्र्यः। अपसो न- शुभकर्माणीव। विष्टिभिः- शरणभूताभिः स्वशक्तिभिः। विश प्रवेशने। परावतः- परात् स्थानाच्चिदाकाशात्। समानेन योजनेन- समत्वयोगेन। अर्चन्ति- चिदाकाशं पूजयन्ति। सुकृते- शोभनकर्मकृते। सुदानवे- शोभनदात्रे। सुन्वते- रसनिष्पादकाय। यजमानाय- पूजकाय। विश्वेदह- सर्वामेव। इषम्- शोभनसङ्कल्पशक्तिम्। वहन्तीः- आवहन्त्यः॥३॥

अधि पेशांसि वपते नृतूरिवापोर्णुते वक्ष उस्रेव बर्जहम्।

ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः॥ १.०९२.०४

नृतूः- नृत्तशालिनी युवतिः। इव। पेशांसि- विविधभावनारूपाणि। अधि वपते- स्वस्मिन् धारयति। बर्जहम्- क्षीरोपलब्धिस्थानम्। उस्रेव- यथा गौर्वत्साय प्रदर्शयति तथा। वक्षः- स्वहृदयं स्ववत्सेभ्योस्मभ्यम्। अपोर्णुते- प्रकाशयति। विश्वस्मै- सर्वस्मै। भुवनाय- जगते। ज्योतिः। कृण्वती- कुर्वती। उषाः- ज्ञानोदयदेवता। गावः- सूर्यकिरणा धेनवो वा। व्रजम्- स्वोपलब्धिस्थानम्। न- इव। जगद्व्याप्नोति। तमः- अन्धकारमज्ञानम्। वि आवः- विवृतमकरोत्॥४॥

प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम्।

स्वरुं न पेशो विदथेष्वञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्रेत्॥ १.०९२.०५

अस्याः- उषसः। रुशत्- रोचमानम्। अर्चिः- तेजः। प्रति अदर्शि- दृश्यते। वि- विशेषेण। तिष्ठते- तिष्ठति। कृष्णम्- कृष्णवर्णम्। अभ्वम्- महान्धकारम्। बाधते। विदथेषु- यज्ञेषु। यैर्विदन्त्यात्मानमिति विदथाः। आत्मा यज्ञेन कल्पतामिति श्रुतौ। स्वरुं न- मन्त्रमयम्। स्वृ शब्दोपतापयोः। पेशः- रूपम्। अञ्जन्- व्यक्तीकुर्वन्। दिवो दुहिता- चिदाकाशजा। चित्रम्- असाधारणम्। भानुम्- आत्मसूर्यम्। अश्रेत्- असेवत। श्रिञ् सेवायाम्॥५॥

Dr. Ranganji
WEBOLIM

अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति।

श्रिये छन्दो न स्मयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः॥ १.०९२.०६

अस्य- एतस्य। तमसः- अन्धकारस्याज्ञानस्य। पारम्। उषाः। उच्छन्ती- व्याप्नुवती। वयुना- ज्ञानानि। कृणोति- करोति। छन्दो न- वेद इव। श्रिये- मङ्गळाय भवति। विभाती- दीप्तिमती। स्मयते- मन्दं हसति। सुप्रतीका- शोभनरूपिणी। सौमनस्याय- शोभनचित्ताय। अजीगः- तमो ग्रसति॥६॥

भास्वती नेत्री सूनृतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः।

प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ उप मासि वाजान्॥ १.०९२.०७

भास्वती- ज्योतिष्मती। सूनृतानाम्- प्रियहितभावानाम्। नेत्री- प्रणेत्री। दिवो दुहिता- चिदाकाशजा। गोतमेभिः- अतिशयज्ञानवद्भिः। स्तवे- स्तूयते। उषः- ज्ञानोदयदेवते। प्रजावतः- सन्ततियुक्ताः। नृवतः- नेतृयुक्ताः। अश्वबुध्यान्- प्राणबोधिनीः। गोअग्रान्- ज्ञानप्रधानाः। वाजान्- गतीः। वज गतौ। उप- अस्मत्समीपे। मासि- प्रदर्शयसि। मा माने॥७॥

उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम्।

सुदंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम्॥ १.०९२.०८

सुदंससा- शोभनकर्मनिष्पादयित्र्या। श्रवसा- श्रुत्या। या। विभासि- शोभसे। सा त्वम्। सुभगे- सौभाग्यवति। उषः- ज्ञानोदयदेवते। बृहन्तम्- महान्तम्। सुवीरम्- शोभनवीर्यम्। दासप्रवर्गं- सुदासयुक्तम्। श्रुतौ दासा द्विविधाः। विषयभोगदासाः अधार्मिकभावनानि। दिवोदासाः धार्मिकभावनानि। अश्वबुध्यम्- प्राणबोधकम्। रयिम्- अनुभवम्। यशसम्। अश्याम्- भुञ्जे॥८॥

Dr. Rangani
WEBOLIM

विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः॥ १.०९२.०९

देवी- द्योतनशक्तिः। प्रतीची- प्रत्यङ्मुखी। चक्षुः- ज्ञानचक्षुः। विश्वानि- सर्वाणि। भुवनानि। अभिचक्ष्य- अभिप्रकाश्य। उर्विया- विस्तृतभावनया। वि- विशेषेण। भाति- राजते। विश्वम्- सर्वम्। जीवम्- प्राणधारणम्। बोधयन्ती- प्रबोधयन्ती। चरसे- सञ्चरसि। विश्वस्य- सर्वस्य। मनायोः- चित्ताधारभूतप्राणस्य। मुख्यप्राणस्येति भावः। वाचम्- मन्त्रम्। अविदत्- ज्ञातवती॥९॥

पुनःपुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना।

श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः॥ १.०९२.१०

पुराणी- सनातनी प्राचीना। पुनः पुनः। जायमाना- प्रादुर्भूता। समानं वर्णं- समानरूपेण। अभि- अभितः। शुम्भमाना- शोभमाना। कृत्नुः- कर्तनशीलः। श्वघ्नीव- इन्द्र इव। देवशुन्या सरमया गोवेदनाय वृत्राणि अन्विष्य नाशक इन्द्रः श्वघ्नी। श्रुतौ देवशुनी सरमा जिज्ञासान्वेषणलब्धिदेवता। इन्द्रः ईशनाधिदेवता। गौः चित्किरणः। वृत्राणि चित्किरणावारकशक्तयः। विजः- युद्धाय चलतो वृत्रान्। आमिनाना- हिंसन्ती। देवी- देवता। मर्तस्य- मनुष्यस्य। आयुः- आयुषम्। जरयन्ती- ऊनयन्ती। प्रतिदिनमुदयसमये सा मनुष्यस्य जीवनकाले एकं दिनं गतमिति ख्यापयन्तीत्याधिभौतिके। आध्यात्मिके तु मनुष्यस्य जीवनकालमनित्यमिति ज्ञानं ख्यापयन्तीति भावः॥१०॥

व्यूर्वती दिवो अन्ताँ अबोध्यप स्वसारं सनुतर्युयोति।

प्रमिनती मनुष्या युगानि योषा जारस्य चक्षसा वि भाति॥ १.०९२.११

Dr. Rangani

WEBOLIM

दिवो अन्तान्- नभसः प्रान्तान्। व्यूर्णवती- आच्छादयित्रीं रात्रिं तिरस्कुर्वती। ऊर्णुञ् आच्छादने। अबोधि- बोध्या भवति। स्वसारम्- स्वतः सरन्तीं रात्रिम्। सनुतः- अन्तर्हितप्रदेशे। अप- अपगमय्य। युयोति- पृथक्करोति। मनुष्या युगानि- मनुष्यप्रज्ञाः। प्रमिनाती- प्रकर्षेण दैवप्रज्ञार्थं हिंसन्ती। जारस्य- रात्रेर्जरयितुः सूर्यस्य। योषा- पुत्री। चक्षसा- प्रकाशेन। वि भाति ॥११॥

पशून्न चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न क्षोद उर्विया व्यश्वैत्।

अमिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना॥ १.०९२.१२

चित्रा- असाधारणी। सुभगा- सौभाग्यवती। पशून्न- पशूपलक्षितचित्किरणान्। प्रथाना- प्रख्यापयन्ती। प्रथ प्रख्याने। सिन्धुर्न क्षोदः- स्यन्दनशीलमुदकमिव। उर्विया- विस्तारभावा। व्यश्वैत्- व्याप्नोत्। दैव्यानि- दिव्याः। व्रतानि- नियतीः। अमिनती- अहिंसती। सूर्यस्य- आत्मसूर्यस्य। रश्मिभिः- चित्किरणैः। चेति- संज्ञाता। चिती संज्ञाने। दृशाना- दृश्यमाना वर्तते ॥१२॥

उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति। येन तोकं च तनयं च धामहे॥ १.०९२.१३

वाजिनीवति- शोभनगतिमति। उषः- ज्ञानोदयदेवते। येन। तोकम्- अस्मत्पुत्रम्। तनयम्- पौत्रम्। च। धामहे- दधीमहि। तत्। चित्रम्- विचित्रं बलम्। अस्मभ्यम्। आ भर- संपादय ॥१३॥

उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि। रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति॥ १.०९२.१४

Dr. Rangaji

WEBOLIM

अश्वावति- प्राणवति। विभावरि- दीप्तियुक्ते। गोमति- रश्मियुक्ते। सूनृतावति- प्रियहितभावनावति। उषः- ज्ञानोदयदेवते। अद्य- इदानीम्। इह- अत्र। अस्मे- अस्माकम्। रेवत्- दानयोग्यधनयुक्तं कर्म यथा भवति तथा। व्युच्छ- तमो निवारय। व्याप्ता भवेति भावः ॥१४॥

युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः। अथा नो विश्वा सौभगान्या वह॥ १.०९२.१५

वाजिनीवति- शोभनगतियुक्ते। उषः। अद्य- इदानीम्। अरुणान्- रोचमानान्। अश्वान्- तुरगोपलक्षितप्राणान्। युक्ष्व- योजय। अथ- अनन्तरम्। नः- अस्माकम्। विश्वा- सर्वाणि। सौभगा- सौभाग्यानि। आ वह- प्रापय ॥१५॥

अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद्दस्रा हिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम्॥ १.०९२.१६

दस्रा- दर्शनीयौ। अश्विना- प्राणापानेश्वरौ। ज्ञानोदयपालकौ। आ- समन्तात्। अस्मत्- अस्माकम्। गोमत्- चिद्रश्मियुक्ता। हिरण्यवत्- हितरमणीयभावनायुक्ता। वर्तिः- स्थितिर्यथा भवति तथा। अर्वाक्- अर्वाचीनम्। रथम्- वाहनं लक्ष्यप्रापकगतिप्रतीकम्। समनसा- सहृदयौ। नि यच्छतम्- आवर्तयतम् ॥१६॥

यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः। आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम्॥ १.०९२.१७

यौ। इत्था- इत्थम्। दिवः- चिदाकाशात्। ज्योतिः- ज्योतिर्मयं ध्वनिमयम्। श्लोकम्- मन्त्रम्। जनाय। चक्रथुः- अकुरुताम्। अश्विना- तावश्विनौ। युवम्- युवाम्। नः- अस्माकम्। ऊर्जं- शक्तिम्। आ वहतम्- प्रापयतम् ॥१७॥

एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्तनी। उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये॥ १.०९२.१८

Dr. Rangaraj

WEBOLIM

सोमपीतये- रसानुभवाय। उषर्बुधः- ज्ञानोदये प्रबुद्धाः। देवा- द्योतनशीलौ। मयोभुवा- आनन्दमयौ। दस्रा- दर्शनीयौ। हिरण्यवर्तनी- दीप्तमार्गौ। अश्विनौ। इह- अत्र। आ वहन्तु- प्रापयन्तु ॥१८॥

Dr. Ranganji

WEBOLIM